Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

पत्रकारिता में मदन मोहन मालवीय की भूमिका

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

पत्रकारिता में मदन मोहन मालवीय की भूमिका

Sushma Devi

Scholar (History Department) Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore

सारांश – *''यह कहावत सर्वविदित है कि कलम की धार तलवार से भी तेज होती है। इसी बात को मालवीय जी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से चरितार्थ किया है।'' पं. मदन मोहन मालवीय जी पत्रकारिता को देश–सेवा के लिए प्रमुख हथियार मानते थे। मालवीय जी की उत्कृष्टता का पता इस बात से भी लगाया जा सकता है कि उनकी पत्रकारिता के प्रति कितनी रुचि थी। जब उन्होंने राजा रामपाल सिंह के ऑफिस में सम्पादक के पद पर ज्वाइन किया, उस समय उनकी तनख्वाह 150 रुपए थी। लेकिन अच्छे कार्य और स्पष्टवादिता के कारण राजा साहेब ने 15 दिन बाद ही उनकी तनख्वाह 200 रुपए कर दी थी।*

मुख्य शब्द – *पत्रकारिता, सम्पादकीय, स्वाधीनता*

----------X----------

सन् 1886 में जब राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो मालवीय जी ने मंच पर ओजस्वी भाषण दिया। जिससे मंच पर बैठे प्रतापगढ़ के राजा रामपाल सिंह उनके भाषण से बहुत अधिक प्रभावित हुए। राजा रामपाल सिंह को अपने समाचार–पत्र के लिए एक योग्य सम्पादक की आवश्यकता थी और अब तक जो राजा साहब ढूँढ रहे थे, अब उनका स्वप्न पूरा हो गया था। राजा साहब के दो समाचार–पत्र 'लंदन से अंग्रेजी एवं हिन्दी में' हिन्दुस्तान नामक समाचार–पत्र छपता था।'' राजा ने प्रयाग आकर मालवीय जी से अपने पत्र के संपादन का कार्य भार लेने की प्रार्थना की।

मालवीय जी ने संपादक की कुर्सी संभालने से पहले पत्र के संचालक राजा रामपाल से यह शर्त तय कर ली थी कि राजा साहब उनके काम में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और जो वे चाहेंगे अपनी अपनी इच्छानुसार पत्र में लिखेंगे। राजा साहब ने मालवीय जी की यह शर्त मान ली। इस प्रकार मालवीय जी ने काला कांकर में लगभग ढाई वर्ष तक प्रथम हिन्दी दैनिक का सम्पादन कुशलतापूर्वक किया। अपने सम्पादक मंडल में मालवीय जी ने कई विद्वानों पंडित नारायण मिश्र और बालमुकुन्द गुप्त का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मालवीय जी ने लाहौर से प्रकाशित होने वाले 'कोहिनूर' नामक उर्दू पत्र के सम्पादक पद से त्याग–पत्र दिलाकर दैनिक हिन्दुस्तान में सम्पादक नियुक्त किया था। यद्यपि उन दिनों गुप्त जी हिन्दी भाषा भली प्रकार नहीं जानते थे किन्तु मावलयी जी की प्रेरणा से उर्दू छोड़कर हिन्दी सीखी और आधुनिक हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व कार्य किया। मालवीय जी पत्रकारिता को कला मानते थे वे स्वतन्त्र रूप से हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा मानते थे।

मालवीय जी की लेखनी से हिन्दुस्तान चमक उठा और ग्राहकों की संख्या बढ़ती चली गई। मालवीय जी का अधिकतर समय सम्पादन में ही बीतता था। सप्ताह में छः दिन कालाकांकर में रहते थे, एक दिन प्रयाग में रविवार को पत्र का साप्ताहिक संस्करण राजा साहब के ही सम्पादकत्व में निकला। मालवीय जी के लेख बड़े गुढ़ होते थे। मालवीय जी सभी विषयों पर लेख लिखते थे और सभी विषयों पर मालवीय जी की पूरा प्रभाव रहता था तभी तो लोग हिन्दुस्तान पढ़ने के लिए व्याकुल रहते थे। मालवीय जी अपने प्रतिकूल विचारों को भी पत्र में स्थान दिया करते थे जो निष्पक्ष पत्रकारिता का द्योतक हैं। यही कारण था कि यह अपने समय में अधिक प्रकाशित होता था। मालवीय जी के सम्पादक तत्त्व में हिन्दुस्तान पत्र ने बड़ी लोकप्रियता अर्जित की थी। तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं पर उनके निर्भयतापूर्ण सम्पादकीय लेख और टिप्पणियाँ लोग बड़े चाव से पढ़ते थे। उस पत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह सरकार और जनता दोनों का समान आदर करता था। जनता के हितों के विरुद्ध सरकारी नीतियों की आलोचना करने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। क्योंकि मालवीय जी अत्यन्त सत्यनिष्ठ और निष्पक्ष आलोचक थे। किसी भी उचित और सत्य का समर्थन करने में वे किसी के सामने नहीं झुके। उनकी आलोचना का सबसे बड़ा गुण यह था कि उन्होंने कभी किसी व्यक्ति वर्ग या संस्था के विरुद्ध किसी प्रकार के अपशब्द व्यंग्य या अशिष्ठ भाषा का प्रयोग नहीं किया और सदा सम्पादकीय शालीनता, औचित्य और महत्ता का उच्च स्तर बनाये रखा। उन्होंने सदा यह ध्यान रखा कि उनका पत्र किसी राजनीतिक दल या सम्प्रदाय का पिट्ठू न बन जाये। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर मालवीय जी का पूर्ण अधिकार था। लेकिन हिन्दी में उन्होंने ऐसी सरल शैली का अनुसरण किया था जिसे हिन्दी के इतिहासकार और विद्वान 'मालवीय जी की हिन्दी' के नाम से स्मरण करते रहते हैं। उनकी शैली की यह विशेषता थी कि वह सरल और सर्व–बोध्य थी और उसमें बहुत अधिक संस्कृत की कलिष्ठ शब्दावली का पूर्ण अभाव रहा था। एक दिन राजा साहब ने शाम के समय मालवीय जी को बुलाया था और उस समय वह मदिरा पान कर रहे थे। जैसा कि मालवीय जी ने पत्र ज्वाइन करते समय कहा था कि आप मुझे उस समय अपने पास मत बुलाना जब आप मदिरा के नशे में हों। नहीं तो वो मेरा आपके पत्र में आखिरी दिन होगा। पर क्योंकि आज राजा ने उसे मदिरापान के समय पर बुलाया था तो मालवीय जी ने जैसे ही जाकर देखा कि राजा मदिरा पान कर रहा है तो तुरन्त उसी समय त्याग पत्र दे दिया। 1889 में

www.ignited.in

हिन्दुस्तान छोड़कर चले गये और त्याग के हवनकुण्ड में यह उनकी पहली आहूति थी। हिन्दुस्तान के माध्यम से मालवीय जी ने हिन्दी पत्रकारिता को मूल्यवान बना दिया। उन्हीं का परिणाम हे कि– हिन्दुस्तान की सम्पादकीय नीति सदा स्थिर रही। हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि का अध्ययन इस पत्र के द्वारा अन्त तक होता रहा है। हिन्दुसतान दैनिक से त्याग पत्र देने पर भी पत्रकारिता से उनका सम्बन्ध अटूट रहा। उन्होंने अयोध्यानाथ के अंग्रेजी पत्र 'इंडियन ओपीनियन' के सम्पादन में भी उनका हाथ बंटाया। यह पत्र भी निर्भीकता के लिए प्रसिद्ध हो गया था। मालवीय जी के आ जाने पर इस पत्र की शक्ति और प्रसिद्धि और भी अधिक बढ़ गई। आगे चलकर यह पत्र लखनऊ के 'एडवोकेट' में मिल गया परन्तु किसी न किसी रूप में मालवीय जी का उससे सम्बन्ध बना रहा। परन्तु मालवीय जी अपना एक निजी पत्र हिन्दी में चाहते थे। उन्होंने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अनेक लेख लिख कर अपने विचारों को सामान्य जनता में जागृत करने का प्रयत्न किया और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सन् 1907 में बसंत–पंचमी के दिन प्रयाग से क्रान्ति का अगुवा 'अभ्युदय' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। जिसका सम्पादन दो वर्ष तक मालवीय जी करते रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रस्ताव का प्रचार करने के साथ–साथ तत्कालीन अन्य प्रमुख समस्याओं पर भी उसमें प्रचार होता रहा। जब मालवीय जी उस पत्र के लिए पूरा समय और धन देने में असमर्थ होने लगे तो उसके सम्पादन का भार पुरुषोत्तम दाम ठण्डन को सौंप दिया।

मालवीय जी ने अभ्युदय में विधवा दशा सुधार पर भी लिखा। इन्होंने मूलतः उसके दो उपाय बताए : एक तो वैवाहिक आयु को बढ़ाना, दूसरे विधवा आश्रमों की स्थापना करना। अभ्युदय की स्पष्टता और निर्भीकता के कारण उसे अनेक बार ब्रिटिश सरकार से लोहा लेना पड़ा था। कई बार भारी अर्थ दण्ड भी देना पड़ा और महीनों उसका प्रकाशन भी बंद रहा। मालवीय जी जानते थे कि प्रैस की स्वतन्त्रता के लिए यह मूल्य भी देना पड़ता है। जैसा भी हो इसकी रक्षा करनी है। उन्होंने अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन बुलाने की व्यवस्था की। यह सम्मेलन प्रथम बार 1908 में राजा रामपाल सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में मालवीय जी ने कहा– ब्रिटिश सरकार अपनी दमन नीतियों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रैस एक्ट और न्यूज पेपर्स एक्ट जैसे विधान बना रही है। इससे हमारे देश के पत्रों की स्वतन्त्रता पूर्णतः समाप्त हो जायेगी। यदि भारत के सम्पादक और पत्रकार वीरतापूर्वक इस घातक प्रवृत्तिका विरोध नहीं करते तो भारतीय पत्रों का भविष्य संकट ग्रस्त हो जायेगा। मालवीय जी ने कर्त्तव्य पालन में कभी लोकप्रियता और अप्रियता का विचार नहीं किया। अमीर और गरीब को सदा उन्होंने एक नजर से देखा। देशी राज्यों की प्रजा का पक्ष और किसानों की हिमायत तो इसकी मशहूर है ही इसने एक गरीब उपलों वाली एक औरत की इज्जत के लिए हलचल मचा दी। भ्रष्टाचार की बुराई करना मालवीय जी ने कभी नहीं छोड़ा। मालवीय जी ने कभी किसी के आगे सिर नहीं झुकाया और निडर होकर सब बात कहने में भी कभी संकोच नहीं किया।

मालवीय जी सनातन धर्म के उपासक थे। इस धर्म हेतु उन्होंने अपनी अन्तिम श्वास तक प्रयत्न किया और इसकी रक्षा के लिए अनेक संस्थाएँ बनाई। जिनमें हिन्दू महासभा प्रमुख हे। इसके विचारों को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए मालवीय जी ने 20 जुलाई 1933 की गुरु पूर्णिमा को 'सनातन धर्म' नामक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की गइ। इसमें विशेषतः उनके धार्मिक विचार प्रकाशित होते थे। मालवीय जी की सम्पादकीय नीति अत्यन्त निर्भीक और निष्पक्ष थी। देश के सार्वजनिक जीवन में जहाँ कहीं भी असामाजिक अथवा अकल्याणकारी तत्त्व दृष्टिगत होते आपकी लेखनी उनके परिष्कार के लिए पूरी शक्ति से प्रहार करती। चोट तो अवश्य गहरी होती थी पर कटुता अथवा प्रतिशोध उत्पन्न करने वाली नहीं। देश की स्वाधीनता आपकी नीति का सर्वोपरि लक्ष्य रहा है। राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ ही देश में स्वदेशी के प्रचार पर सदा बल दिया।

समाचार पत्र में लेख का सम्पादन कैसे किया जाए इस विषय में मालवीय जी ''लेख का सम्पादन तथा संशोधन स्वयं बहुत सावधानी से करतते थे और तब लेख कम्पोज होने के लिए भेजा जाता था। लेख का प्रूफ आने पर आप उसका स्वयं संशोधन करते थे।''

इस प्रकार राष्ट्रीय उत्थान मूलक सम्पादकीय नीति के विविध स्वरूपों के साथ महामना मालवीय जी ने पत्रों की भाषा मर्यादा तथा स्वतन्त्रता आदि के विषय में भी महत्त्वपूर्ण निर्देश दिए। उन्होंने जिन पत्रों का संस्थापन, संचालन और सम्पादन किया, यदि उनका गहराई से अध्ययन किया जाए तो उनमें कुछ तत्त्वों का पता चलता है कि पत्र का उद्देश्य सम्पादकीय नीति, तत्कालीन समाज की आवश्यकता साहित्य का सृजन और साहित्यकारों का सहयोग आदि सिद्धान्तों की झलक स्पष्ट रूप से झलकती है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि मालवीय जी के लिए पत्रकारिता जीविकापार्जन नहीं थी, बल्कि वह उनके लिए मिशन और देश सेवा थी। पत्रकारिता में अपनी सम्पादकीय नीति की स्वतन्त्रता को रखने के लिए भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा। लेकिन मालवीय जी अपने सिद्धान्तों तथा आदर्शों से पीछे नहीं रहे।

अतः कहा जा सकता है कि मालवीय जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो सक्रिय सहयोग दिया वह सराहनीय और उल्लेखनीय है। पत्रकारिता के सहयोग से उन्होंने अपने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक विचारों को जन साधारण तक पहुंचाया था। यद्यपि इसमें उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

संदर्भ सूची

डॉक्टर ईश्वर प्रसाद वर्मा (1884), महामना मालवीय, साधना सदन, इलाहाबाद

रामनरेश त्रिपाठी (1992), तीस दिन मालवीय जी के साथ, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

एस.पी. उपाध्याय, सोर्ट स्केच ऑफ लाईफ ऑफ ऑनरेबल राजा रामपाल सिंह

नागरी प्रचारिणी पत्रिका, मालवीय शती अंक

जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, लोकराज

सीताराम चतुर्वेदी, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मालवीय जी

अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, पूर्व उद्धृत

सीताराम चतुर्वेदी, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मालवीय जी

लक्ष्मीशंकर व्यास, मालवीय जी और पत्रकारिता, नागरी प्रचारिणी पत्रिका

लक्ष्मीशंकर व्यास, पूर्व उद्धृत

www.ignited.in